ओ३म्

# ‘हम जब सो रहे होते हैं तो हमारे प्राणों को परमात्मा ही चलाता हैः स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती’

**–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।** (030616 Swami Chitteshwaranandji)

श्रीमद् दयानन्द ज्योतिर्मठ आर्ष गुरुकुल पौंधा, देहरादून का तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव 3 जून 2016 को आरम्भ हुआ। इस दिन सामवेद पारायण यज्ञ के बाद वैदिक परम्पराओं के अनुरूप **‘‘ओ३म् ध्वज’’** का आरोहण किया गया। इस अवसर आर्यजगत की प्रमुख विभूतियां सम्मिलित थीं। इस अवसर पर स्वामी चित्तेश्रानन्द सरस्वती जी ने आर्य बहिनों व भाईयों को सम्बोधित किया। उनके इस अवसर पर व्यक्त किये गये विचारों को अत्यन्त उपयोगी जानकर हम पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं। हम अपनी ओर से इतना ही कहेंगे कि स्वामीजी ने जो कहा उसका एक एक अक्षर सत्य है। हमें व अन्य सभी को भी इस पर विचार कर इसे स्वीकार करना चाहिये और इसी के अनुरूप अपना आचरण निश्चित करना चाहिये।

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती ने कहा कि ईश्वर हमारे परम हितकारी सदा से हैं। ईश्वर से हमें अनादिकाल से सब कुछ मिलता आ रहा है। संसार व प्राणी मात्र का एक ही रचयिता परमेश्वर हैं। मनुष्य शरीर के सभी अंगों का उल्लेख कर स्वामी जी ने कहा कि इनका रचयिता व पोषक परमात्मा ही है। स्वामी जी ने कहा कि जब हम सो रहे होते हैं तो हमारे प्राणों को परमात्मा ही चलाता है। उन्होंने कहा कि भूमि भगवान की है तथा इस पर जल, वायु, अग्नि, आकाश, अन्न, दुग्ध आदि सभी पदार्थ परमात्मा के बनाये हुए हैं। उसी की कृपा से हमारा शरीर व जीवन चल रहा है। भगवान ने हमें ज्ञान–इन्द्रियां व कर्मेन्द्रियां दी हैं जिससे हम सुख पाते हैं। ईश्वर की कृपा से हमें मनुष्य योनि मिली है। हम चिन्तन कर सकते हैं। मनुष्य जीवन अपने आप को जानने के लिए है। हमें आवागमन से छूटने का अवसर मिला है। हमारी जीवन यात्रा पूर्व जन्मों से भी पूर्व कभी मोक्ष अवधि के समाप्त होने पर आरम्भ हुई है। हमें परमात्मा को जानना है तथा विवेक व ज्ञानपूर्वक जीवन को जीना है। हमें यह ध्यान रखना है कि हम शरीर नहीं अपितु जीवात्मा हैं। शरीर पैदा होता और नष्ट होता है परन्तु आत्मा न पैदा होती है और न नष्ट ही होती है। हमें जीवन को पवित्रता से जीना है। जीवन के एक एक क्षण का उपयोग करना है। परमात्मा हमारा निकटतम है। जीवात्मा और ईश्वर का व्याप्य व्यापक सम्बन्ध है। उसे जानने व अनुभव का हमें प्रयास करना है।

**–मनमोहन कुमार आर्य**
**पताः 196 चुक्खूवाला–2**
**देहरादून–248001**
**फोनः09412985121**

Created using easyPDF Printer
Click here to purchase a license to remove this image

ओ३म्

# परमात्मा महान यशवाला है : स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

**–मनमोहन कुमार आर्य (030616 swami shradhanandji)**

श्रीमद् दयानन्द ज्योतिर्मठ आर्ष गुरुकुल पौंधा, देहरादून का तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव 3 जून 2016 को आरम्भ हुआ। इस दिन एक सत्यार्थ सम्मेलन का आयोजन किया जिसे स्वामी श्रद्धानन्द सहित अनेक विद्वानों ने सम्बोधित किया। यहां हम स्वामी श्रद्धानन्द जी के सम्मेलन में प्रस्तुत विचारों को दे रहे हैं। आशा कि पाठक इन्हें पसन्द करेंगे।

सत्यार्थ सम्मेलन के संयोजक श्री अजित कुमार ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को प्रवचन के लिए आमंत्रित कर उन्हें **'ईश्वर का सत्यार्थ स्वरूप'** विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करने का निवेदन किया। स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना व्याख्यान आरम्भ करते हुए कहा कि यहां बैठे हुए हम सब व्यक्ति एक ही विचार को मानते हैं जिसे वैदिक विचार कहते हैं। परमात्मा के सत्यस्वरुप का दर्शन कराने के लिए सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ की रचना महर्षि दयानन्द ने की है। सत्यार्थप्रकाश में ऋषि दयानन्द ने ईश्वर के अनेक नामों से हमारा परिचय कराया है। पृथिवी, जल, वायु आदि अनेक पदार्थों को भी ऋषि ने संस्कृत व्याकरण के आधार पर परमात्मा के नाम सिद्ध किया है। **उन्होंने कहा कि लोगों ने अलग अलग नामों से अलग–अलग ईश्वर की कल्पना कर ली।** आज भी लोग अनेक ईश्वर को मानते हैं। **ऋषि दयानन्द ने महाभारत के बाद वेदों के आधार पर एक ईश्वर का सिद्धान्त दिया।** पौराणिक लोगों ने ईश्वर के अवतार की कल्पना कर समाज में अनेक भ्रान्तियां फैलाई हैं। उन्होंने कहा कि ईश्वर के अवतार का विचार वेद और महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों के विरुद्ध है। अवतारवाद के आधार पर प्रतिमा की पूजा समाज में चल पड़ी। वैदिक दर्शन के अनुसार परमात्मा की प्रतिमा न होने से प्रतिमा पूजन करना अनुचित है। स्वामीजी ने कहा कि यजुर्वेद प्रतिमा पूजन का खण्डन करता है। **वेद कहता है कि वह परमात्मा महान यशवाला है।** उसी परमात्मा की उपासना का विधान वेद करते हैं। स्वामीजी ने कहा कि जो मनुष्य ईश्वर के यथार्थ स्वरूप से भिन्न अन्य किसी की उपासना करता है वह दुःखसागर में डूबा रहता है। आर्यसमाज के दूसरे नियम पर विचार करने से ईश्वर विषयक भ्रान्तियों का निराकरण हो सकता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कहा कि ईश्वर निर्दोष एवं निर्विकार है। सारा ब्रह्माण्ड परमात्मा के गर्भ में है। आलोचनाओं का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि उदर में मल–मूत्र होने पर भी मनुष्य को दुर्गन्ध नहीं आती। इसी प्रकार से समस्त संसार परमात्मा के गर्भ में होने के कारण परमात्मा को मल मूत्र की दुर्गन्ध नहीं आती। ईश्वर जगत में व्यापक है, इसीलिए परमात्मा का नाम विष्णु है।

स्वामी श्रद्धानन्द ने कहा कि मूर्ति पूजा जैन मत से चली है। जैनियों ने यह मूर्तिपूजा वाममार्गियों से ली है। परमात्मा कण–कण में व्यापक है। परमात्मा अग्नि व आकाश सहित संसार के सभी पदार्थों में व्यापक है। प्रश्न हो सकता है कि यह सभी एक साथ कैसे रहते हैं? स्वामी जी ने कहा कि पत्थर जल, अग्नि, पृथिवी व आकाश से मिलकर बना है। यह सभी पत्थर में रहते हैं। उन्होंने कहा कि जो सूक्ष्म होता है वह अपने से कुछ स्थूल में प्रवेश कर सकता है। ईश्वर सर्वातिसूक्ष्म होने से सब पदार्थों के अन्दर रह सकता है। ईश्वर सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी है। गीता से भी इसकी पुष्टि होती है। **'ईश्वर सर्वभूतानां हृद्येषु अर्जुन तिष्ठति।'** स्वामी जी ने कहा कि परमात्मा सच्चिदानन्द स्वरूप है। उपनिषदें कहती हैं कि परमात्मा एक है। योगदर्शन के अनुसार क्लेश, कर्म व कर्म के फलो से रहित पुरुष विशेष ईश्वर है। ऐसे परमात्मा की हम सबको स्तुति करनी चाहिये। **गुणवान में गुण और दोष में दोष देखना स्तुति कहलाती है।** परमात्मा के गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार स्वयं को बनाना व वेदाज्ञा का पालन करना ईश्वर की स्तुति है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कहा कि हम सबको परमात्मा से प्रेम करना चाहिये। परमात्मा हमारे मित्र हैं। परमात्मा प्रकाशस्वरूप और ज्ञान स्वरुप हैं। उसकी स्तुति करने से हमारे जीवन से अन्धकार दूर होकर सच्चा ज्ञान प्राप्त होता है। स्वामी जी ने कहा कि परमात्मा का एक नाम अतिथि भी है। इस नाम से यह ज्ञात होता है कि ईश्वर को समय सीमा में नहीं बांधा जा सकता। इसी के साथ स्वामी जी ने अपने प्रवचन को

Created using easyPDF Printer
Click here to purchase a license to remove this image

विराम दिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी के बाद आर्य भजनीक श्री मामचन्द पथिक जी ने एक भजन प्रस्तुत जिसके कुछ बोल थे **'सूर्य की लाली में और चन्द्र की उजियाली में बोलो वो कौन है, बोलो वो कौन है? जो हरियाली में, वृक्षों की डाली डाली में है, बोलो वो कौन है, बोलो वो कौन है?'** इस भजन को श्रोताओं में बहुत पसन्द किया। इति।

**—मनमोहन कुमार आर्य**
**पताः 196 चुक्खूवाला—2**
**देहरादून—248001**
**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**प्रेरक संस्मरण**

# 'पं. लेखराम द्वारा अपने प्रवचन का इश्तिहार लगाने, आर्यसमाज मन्दिर में झाड़ू लगाने व दरिया बिछाने का प्रेरणादायक संस्मरण'

**—मनमोहन कुमार आर्य** (090616 pt lakhram ji)

श्रीमद् दयानन्द आर्ष गुरुकुल पौंधा देहरादून के सतरहवें उत्सव पर अन्य अनेक विद्वानों सहित आर्यजगत के सुप्रसिद्ध विद्वान, गीतकार और भजनोपदेशक पं. सत्यपाल पथिक जी भी आये हुए थे। आपने हमे अत्यधिक प्रेम, स्नेह व सम्मान दिया जिसके लिए हम आजीवन उनके आभारी रहेंगे। आपने हमें अनेक महत्वपूर्ण संस्मरण सुनाये। इससे पूर्व भी हम उनके सुनाये दो या तीन संस्मरण फेश बुक पर पोस्ट कर चुके हैं। उसी श्रृंखला में यह अन्तिम संस्मरण है जो उन्होंने हमें सुनाया था। पं. आत्माराम अमृतसरी जी इस घटना क प्रत्यक्षदर्शी थे। पं. सत्यपाल पथिक जी ने उनसे इस घटना व संस्मरण की पुष्टि भी की थी।

एक युवक ने अमृतसर नगर में दीवार पर एक व्यक्ति को इश्तिहार लागाते हुए देखा व उसे पढ़ा। उसके अनुसार उस दिन आर्यसमाज मन्दिर में ऋषिभक्त पंडित लेखराम जी का प्रवचन होना था। वह युवक आर्यसमाज मन्दिर, अमृतसर में प्रवचन से काफी समय पहले पहुंच गया। वहां उसने देखा कि इश्तिहार लगाने वाला व्यक्ति ही आर्यसमाज में झाड़ू लगा रहा है। इसके बाद उसने आर्यसमाज में दरियां बिछाई। प्रवचन के आरम्भ का समय होने वाला था अतः लोग वहां आने लगे। कुछ ही देर में समाज मन्दिर में हजारों की भीड़ हो गई। यह युवक यह सब कुछ देखता रहा और स्वयं श्रोताओं के बीच बैठ गया। आर्यसमाज के मंत्री व प्रधान जी भी वहां आ गये। प्रवचन से पूर्व एक व अधिक भजन प्रस्तुत हुए।

मंत्री जी ने उस महामानव जिसके प्रवचन सुनने लोग समाज मन्दिर में आये थे, प्रवचन देने की प्रार्थना की। वह युवक देखता है कि इश्तिहार लगाने वाला, समाज मदिर में झाड़ू लगाने वाला व दरिया बिछाने वाला व्यक्ति ही प्रवचन कर रहा है। यह देख कर उसे सुखद आश्चर्य हुआ। यह है पं. लेखराम जी के जीवन की महानता। वह आर्यसमाज के महान प्रचारक व विद्वान होकर भी छोटे से छोटा काम अपने हाथो से करने में संकोच नहीं करते थे। इसमें उन्हें किसी प्रकार की लज्जा का अनुभव नहीं होता है। पंडित लेखराम जी को सादर नमन्।

हमें भी सन् 1994—1995 के वर्ष में आर्यसमाज धामावाला में आर्यसमाज में झाड़ू लगाने व दरिया बिछाने का एक या अधिक बार अवसर मिला है। हमारे समाज के लोगों ने तब इसके विरुद्ध कटाक्ष भी किये थे। उन दिनों सत्संग के संचालन व व्यवस्था का दायित्व आर्य विद्वान हमारे मित्र प्राध्यापक अनूप सिंह और श्री राजेन्द्र कुमार

Created using easyPDF Printer
Click here to purchase a license to remove this image

प्रशासक व अन्य वरिष्ठ सदस्यों द्वारा हमें दिया गया था। उन दिनों हम व्यवस्था व संचालन के साथ सत्संग की पूरी कार्यवाही को अपनी डायरी में नोट करते थे। घर आकर कार्यक्रम में भजन व प्रवचनों आदि के आधार पर सुलेख लिखकर दो या दिन पृष्ठों की प्रेस विज्ञप्ति बनाते थे। फिर उनकी 6 या 7 फोटो स्टेट कापी कराकर अपने दो पहिया वाहन लूना पर सभी समाचार पत्रों की प्रेस में जाकर उसे प्रकाशनार्थ वितरित करते थे। सभी प्रमुख पत्रों यथा दैनिक जागरण, अमर उजाला, दूनदर्पण, हिन्दी हिमाचल टाइम्स, अंग्रेजी हिमाचल टाइम्स, दून वैली मेल आदि में हमारे समाचार छपते थे। यह क्रम लगभग 1 से सवा वर्ष तक चला जब तक हमें यह दायित्व दिया गया था। इसके बाद वेद प्रचार समिति बनाकर भी हमने यह कार्य किया। यह बात हमने प्रसंग लिखी है। आत्मश्लाधा इसका किंचित तात्पर्य नहीं है। ईश्वर की हम पर कृपा रही है और हमें बचपन से ही संघर्ष व तपपूर्ण जीवन व्यतीत करना पड़ा है। आर्यसमाज से हमें जो लाभ प्राप्त हुआ है उससे हम कभी उऋण नहीं हो सकते। हम समझते हैं कि आर्यसमाज के अधिकारियों को पं. लेखराम जी के जीवन से शिक्षा लेकर स्वयं भी वैसा बनने का प्रयास कर समाज में एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिये। सभी सदस्य भी इसी भावना से ओत प्रोत हो, ऐसा हमें लगता है।

**–मनमोहन कुमार आर्य**
**पताः 196 चुक्खूवाला–2**
**देहरादून–248001**
**फोनः09412985121**

Created using
easyPDF Printer
Click here to purchase a license to remove this image

ओ३म्

# ‘गुरुकुल पौंधा के वार्षिकोत्सव के समापन दिवस पर पं. धर्मपाल शास्त्री एवं स्वामी श्रद्धानन्द जी के मार्मिक प्रवचन’

**–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।** (050616 gurukul dharampal shastri shradhanandji)

श्रीमद्दयानन्द आर्षज्योर्तिमठ गुरुकुल, पौंधा देहरादून के सतरहवें वार्षिकोत्सव के समापन दिवस पर प्रवचन करते हुए आर्य जगत के वयोवृद्ध विद्वान पं. धर्मपाल शास्त्री ने कहा कि सन् 1934 में आर्यसमाज के विद्वान श्री राजेन्द्रनाथ शास्त्री ने गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली की स्थापना की थी। 2 तीन महीने चलकर यह गुरुकुल बन्द हो गया था। बीच में इस गुरुकुल में दो–तीन आचार्य आये परन्तु गुरुकुल नहीं चला। छत्तीस–सैंतीस वर्ष पूर्व आचार्य हरिदेव यहां दो–चार ब्रह्मचारी लेकर आये और इस गुरुकुल गौतमनगर का उद्धार किया। आचार्य हरिदेव जी ने तब से अब तक जितने भी विघ्न व बाधायें आयीं उन सब व्यवधानों व कठिनाईयों का सफलतापूर्वक सामना किया। आचार्य हरिदेव जी आरम्भ में इस गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को स्वयं पढ़ाते भी थे और उनके भोजन की व्यवस्था भी करते थे। परमात्मा में निष्ठा हो, संकल्प सत्य हो व अपेक्षित पुरूषार्थ करने पर यह हो नहीं सकता कि मनुष्य को सफलता न मिले। इनके होने पर रास्ते की सभी बाधायें दूर हो जाती हैं, उन्नति होती है। गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली के बाद आचार्य हरिदेव जी ने हरयाणा में मंझावली में दूसरा गुरुकुल खोला और इसी परम्परा में देहरादून का पौंधा में यह तीसरा गुरुकुल है। इस गुरुकुल को स्थापित हुए 16 वर्ष हो गये हैं। आचार्य हरिदेव जी संन्यास आश्रम में प्रवेश कर अब स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती के रूप में हमारे सामने हैं। इनका व आचार्य धनन्जय जी का तप व परिश्रम हमारे सामने हैं। पं. धर्मपाल शास्त्री ने सहस्रों की संख्या ने उपस्थित श्रोताओं को कहा कि आप भारत भर के गुरुकुलों को जाकर देख लो, इस गुरुकुल के सामने सब फीके पड़ जायेंगे।

पं. धर्मपाल शास्त्री ने कहा कि किसी मनुष्य की 4 दिन की जिन्दगी 100 काम आती है और किसी की 100 वर्ष की जिन्दमी में कुछ नहीं होता। उन्होंने स्वामी प्रणवानन्द जी के गुरुकुल आन्दोलन की चर्चा को जारी रखते हुए कहा कि स्वामी जी ने उड़ीसा में बालकों के लिए अलग व बालिकाओं के लिए अलग दो गुरुकुल खोले। एक गुरुकुल गोमत अलीगढ़ में और एक गुरुकुल छत्तीसगढ़ में खोला। केरल में एक गुरुकुल खोला। वहां सोलह–सतरह विद्यार्थी अध्ययनरत है। उनके आचार्य भी इस उत्सव में पधारे हुए हैं। यहां उपस्थित सभी ऋषि भक्तों का दायित्व हो जाता है कि इन गुरुकुलों के संचालन में किसी प्रकार की कोई बाधा न आने पाये। आप इन

Created using easyPDF Printer
Click here to purchase a license to remove this image

गुरुकुलों के लिए तन मन व धन से सहयोग करें। अपने वक्तव्य को विराम देते हुए पं. धर्मपाल शास्त्री जी ने कहा कि जो व्यक्ति थक कर बैठ जाता है उसे मन्जिल नहीं मिला करती।

पं. धर्मपाल शास्त्री के पश्चात आर्यजगत के विख्यात गीतकार और भजनोपदेशक पं. सत्यपाल पथिक, अमृतसर ने अपना एक स्वरचित और प्रिय भजन प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि लोग पं. गुरुदत्त, पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द और महाशय अमीचन्द को पागल कहा करते थे। इन्हीं की भावनाओं पर आधारित उन्होंने अपनी संगीतमय रचना **''मैं पागल हूं दीवाना हूं, मैं मस्त मस्त मस्ताना हूं। जो शमा जलाई ऋषिवर ने, उस शमा का मैं परवाना हूं''** को गहरे भक्तिभाव में भरकर प्रस्तुत किया जिसे सुनकर श्रोताओं के रूप में उपस्थित सभी ऋषिभक्त इन महान आत्माओं के त्याग व बलिदान की भावनाओं में एकाकार होकर भाव विभोर हो गये और अनेक लोग अपनी अश्रुधारा को बहने से रोक नहीं पाये। उन्हें आंखों को पोछते हुए देखा गया जो यह सिद्ध कर रहा था भजन लेखक व गायक पं. सत्यपाल सरल अपने दोनों कार्यों में सफल रहें है और इस भजन के श्रोताओं के हृदय में प्रविष्ट होकर अपना प्रभाव अश्रुओं के रूप में दिखाने से यह सफल रहा है । भजन वा गीत की समाप्ती पर तालियों की गड़गड़ाहट ने भी भजन की महत्ता को सिद्ध कर दिया।

इस भजन के बाद गुरुकुल गोमत अलीगढ़ उत्तर प्रदेश के आचार्य स्वामी श्रद्धानन्द जी का प्रवचन हुआ। उन्होंने अपने सम्बोधन में आचार्य चाणक्य का उल्लेख कर उनके द्वारा प्रस्तुत प्रश्न **'सुखस्य किम् मूलम्?** का उल्लेख किया और बताया कि प्राणी मात्र जीवन में सुख की चाहना करते हैं। आचार्य चाणक्य के इस प्रश्न का उत्तर प्रस्तुत कर उन्होंने कहा कि सुखस्य मूलम् धर्म अर्थात् सुख का मूल, कारण व आधार धर्म होता है। धर्म के आचरण से सुखों की प्राप्ति होती है। इसक बाद उन्होंने प्रश्न किया कि धर्म का मूल क्या है? इसका उत्तर प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा कि उपनिषदों में धर्म के तीन स्कन्धों यज्ञ, तप और गुरुकुल वासी ब्रह्मचारी का वर्णन किया गया है। इनको अपनाने से धर्म बढ़ता है। धर्म के कार्यों की रक्षा व उनके पालन से आचरित धर्म से सुखों की प्राप्ति होती है। यज्ञ धर्म का प्रथम स्कन्ध है। इसे किसी मनुष्य को नहीं छोड़ना चाहिये। ऋषि परम्परा के ग्रन्थों के निरन्तर स्वाध्याय व उनकी शिक्षाओं के आचरण, पालन व धारण से धर्म की रक्षा होती है। सुपात्रों को दान देने से भी धर्म की रक्षा होती है। सुपात्रों परीक्षा कर उन्हें अवश्य ही दान देना चाहिये। सुपात्रों को दिये गये दान से सुख, यश व परलोक में सुख की प्राप्ती होती है, ऐसा ऋषि दयानन्द का मत है।

धर्म का दूसरा स्कन्ध तप है। जो मनुष्य तप नहीं करता उसके जीवन में निश्चय ही सन्ताप व दुःख आतें हैं तथा विघ्न व बाधायें आती हैं। मनुष्य को जीवन में तप अवश्य करना चाहिये। स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों को विद्यार्थी कहते हैं और गुरुकुल में पढ़ने वालों को तपस्वी या ब्रह्मचारी। क्लेश व दुःखों से बचने के लिए मनुष्यों को तपस्वी बनना चाहिये। विघ्न व बाधाओं को सहन करने का नाम तप है। मान व अपमान से ऊपर उठना व अपमान को भी सहन करना तप है। ब्रह्मचारी को आचार्यकुल अर्थात् गुरुकुल में रहना चाहिये जिससे उसका शारीरिक, बौद्धिक व आत्मिक विकास होगा और वह द्विजत्व को प्राप्त होगा। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस प्रसंग को प्रस्तुत कर गुरुकुलों में आयोजित होने वाले उपनयन, वेदारम्भ व समावर्तन संस्कारों की चर्चा भी की व उनके स्वरूप पर प्रकाश डाला। स्वामी जी ने समावर्तन पर ब्रह्मचारी को दिये जाने वाले उपदेश, सत्यं वद, धर्म चर, स्वाध्यायान्मा प्रमदः आदि वाक्यों की चर्चा भी की। स्वामीजी ने कहा कि समावर्तन पर आचार्य ब्रह्मचारी को यह भी उपदेश करता है कि यदि तुमने हमारे भीतर कोई दुगुर्ण देखा हो तो उसकी अनदेखी कर देना और जो गुण देखें हो उसे अपनाकर उनका आचरण करना। ब्रह्मचारियों को गुरुकुलों में आर्ष ग्रन्थों, जो विद्या के स्रोत हैं और अविद्या रहित हैं, की शिक्षा दी जाती है। **उन्होंने कहा कि गुरुकुलों में ज्ञान, विद्या, देशभक्ति, माता–पिता का आदर–सत्कार व सेवा तथा चरित्र की जो शिक्षा मिलती है वह दुनियां के किसी स्कूल में नहीं मिलती।** स्वामी प्रणवानन्द जी द्वारा किये गये व किये जा रहे वैदिक शिक्षा प्रचार व प्रसार के कार्यों की स्वामी श्रद्धानन्द ने प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि गुरुकुल पौंधा का उत्सव, उत्सव न होकर विशाल मेला बन गया है।

Created using easyPDF Printer
Click here to purchase a license to remove this image

स्वामी श्रद्धानन्द ने कहा कि हम सबको गुरुकुलों को सींचना चाहिये। उन्होंने कहा कि संसार के श्रेष्ठ कार्यों में दान एक है और सबसे बड़ा व श्रेष्ठ दान विद्या का दान है। दान विषयक वेद सम्मत यह सिद्धान्त मनु महाराज का दिया है। **स्वामी जी ने कहा कि आचार्य और ब्रह्मचारी का परस्पर संबंध पिता व पुत्र का होता है।** स्वामी जी ने प्रश्न किया कि पुण्य क्या होता है? इसका उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि सबसे बड़ा पुण्य ब्रह्मचर्य से युक्त जीवन होता है। ब्रह्मचर्य से बढ़कर संसार में दूसरा कोई पुण्य नहीं होता। स्वामीजी ने ईश्वर की चर्चा की और कहा कि ईश्वर का ज्ञान वेद है जो उसने हमें सृष्टि के आरम्भ में दिया था। यह वेद ही संसार, ईश्वर व आत्मा विषयक सभी सत्य विद्याओं का स्रोत है। इन वेदों का अध्ययन ही हमारे गुरुकुलों में कराया जाता है। उन्होंने सहस्रों की संख्या में उपस्थित धर्म प्रेमी ऋषिभक्तों को गुरुकुलों को तन, मन व धन से सींचने का आह्वान किया। स्वामी जी ने जैनियों द्वारा कलशों की निलामी की चर्चा कर कहा कि कोई दान छोटा नहीं होता। सामर्थ्यानुसार सबको दान देना चाहिये। अन्तिम वाक्य **'आप गुरुकुलों को जितना दान दे सकते हैं, अवश्य दें'** कह कर अपने वक्तव्य को विराम दिया।

गुरुकुल का उत्सव हर दृष्टि से सफल रहा। हम आशा करते हैं कि पाठक उपर्युक्त उपदेशों व विचारों को उपयोगी पायेंगे। इतिहास के संरक्षण की दृष्टि से भी यह वर्तमान व भावी विद्वानों के लिए उपयोगी होगा, ऐसी आशा करते हैं। इति।

**–मनमोहन कुमार आर्य**
**पताः 196 चुक्खूवाला–2**
**देहरादून–248001**
**फोनः09412985121**

Created using easyPDF Printer
Click here to purchase a license to remove this image